CoWIN डेटा लीक

संदर्भ : सरकार ने डेटा लीक की खबरों को अफवाह बताया है, जबकि विशेषज्ञों का दावा है कि डेटा लीक हुआ था।

- भारत में एक डेटा उल्लंघन हुआ, जिसमें उन व्यक्तियों के लीक हुए डेटा शामिल थे जिन्हें कोविड-19 के खिलाफ टीका लगाया गया था।
- लीक हुए डेटा में व्यक्तिगत विवरण जैसे नाम, लिंग, जन्म विवरण के साथ-साथ संवेदनशील जानकारी जैसे आधार नंबर, पैन कार्ड, पासपोर्ट नंबर, मतदाता पहचान पत्र और टीकाकरण केंद्र विवरण शामिल हैं।
- डेटा hak4learn नामक एक चैनल द्वारा पेश किए गए टेलीग्राम बॉट पर उपलब्ध कराया गया था, जो हैकिंग ट्यूटोरियल प्रदान करता है। बॉट को अब हटा दिया गया है।
- सरकार डेटा उल्लंघन की खबरों का खंडन कर रही है और कहती है कि CoWIN पोर्टल सुरक्षित है और डेटा गोपनीयता के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपाय हैं।
- केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर का सुझाव है कि बॉट द्वारा उपयोग किए गए डेटा को पहले चोरी किया जा सकता है, जो संभावित पिछले डेटा उल्लंघन का संकेत देता है।
- इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम (CERT-In) घटना की जांच कर रही है।
- CloudSek का कहना है कि हैकर के पास पूरे CoWIN पोर्टल या उसके बैकएंड डेटा तक पहुंच नहीं थी। इसके बजाय, डेटा तक पहुंचने के लिए स्वास्थ्य कर्मियों के लॉग इन का उपयोग किया गया।

CoWIN पोर्टल क्या है?

- CoWIN (Covid Vaccine Intelligence Network) COVID-19 टीकाकरण पंजीकरण के लिए एक भारत सरकार का वेब पोर्टल है, जिसका स्वामित्व और संचालन भारत के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा किया जाता है।
- यह आसपास के क्षेत्रों में उपलब्ध COVID-19 वैक्सीन के बुकिंग स्लॉट प्रदर्शित करता है और इसे वेबसाइट पर बुक किया जा सकता है।
- यह साइट लाभार्थियों को टीकाकरण प्रमाण पत्र भी प्रदान करती है, जो लाभार्थियों के लिए कोविड-19 महामारी के दौरान वैक्सीन पासपोर्ट के रूप में कार्य करता है और डिजिलॉकर में संग्रहीत किया जा सकता है।

CERT-In

- CERT-In कंप्यूटर सुरक्षा घटनाओं के घटित होने पर प्रतिक्रिया देने के लिए राष्ट्रीय केंद्रक अभिकरण है। CERT-In का कार्य क्षेत्र भारतीय साइबर समुदाय है।
- CERT-In की स्थापना 2004 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के एक कार्यात्मक संगठन के रूप में की गई थी।
- सूचना प्रौद्योगिकी (संशोधन) अधिनियम 2008 ने सीईआरटी-इन को साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य करने के लिए राष्ट्रीय एजेंसी के रूप में नामित किया है:
  - साइबर घटनाओं पर सूचना का संग्रह, विश्लेषण और प्रसार।
  - साइबर सुरक्षा घटनाओं का पूर्वानुमान और अलर्ट
  - साइबर सुरक्षा घटनाओं से निपटने के लिए आपातकालीन उपाय
  - साइबर घटना प्रतिक्रिया गतिविधियों का समन्वय।
  - सूचना से संबंधित दिशा-निर्देश, सलाह, भेद्यता नोट और श्वेतपत्र जारी करना
  - साइबर घटनाओं की सुरक्षा प्रथाओं, प्रक्रियाओं, रोकथाम, प्रतिक्रिया और रिपोर्टिंग।
  - साइबर सुरक्षा से संबंधित ऐसे अन्य कार्य जो निर्धारित किए जा सकते हैं।

साइबर सुरक्षा के लिए अन्य सम्मेलन और संस्थान

- **साइबर क्राइम पर बुडापेस्ट कन्वेंशन:** यह पहली अंतरराष्ट्रीय संधि है जो राष्ट्रीय कानूनों के सामंजस्य, जांच तकनीकों में सुधार और राष्ट्रों के बीच सहयोग बढ़ाकर इंटरनेट और साइबर अपराध को संबोधित करना चाहती है। यह 2004 में लागू हुआ। भारत इस सम्मेलन का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है।
- **भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C):** इसकी स्थापना 2018 में व्यापक और समन्वित तरीके से भारत में साइबर अपराध से निपटने के लिए की गई थी। यह गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- **साइबर स्वच्छता केंद्र (बॉटनेट क्लीनिंग एंड मालवेयर एनालिसिस सेंटर):** यह दुर्भावनापूर्ण कार्यक्रमों का पता लगाने और ऐसे कार्यक्रमों को हटाने के लिए निःशुल्क उपकरण प्रदान करता है।
- **साइबर सुरक्षित भारत योजना:** इसे 2018 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डिवीजन (NeGD) और उद्योग के खिलाड़ियों के सहयोग से लॉन्च किया गया था। इसमें साइबर सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम; साइबर सुरक्षा स्वास्थ्य उपकरण किट के साथ अधिकारियों की सर्वोत्तम प्रथाओं और सक्षमता पर कार्यशाला।

संयुक्त राष्ट्र शांति सेना (UNPKF)

संदर्भ : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में तैनात संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों की सुरक्षा और उत्पादकता के लिए प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी और संसाधनों में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

- उन्होंने शांति अभियानों में महिलाओं की सार्थक भागीदारी का आह्वान किया।
- भारत संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सैनिकों के सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है, जिसने अब तक 2.75 लाख सैनिकों का योगदान दिया है।
- वर्तमान में, संयुक्त राष्ट्र के 12 मिशनों में लगभग 5,900 भारतीय सैनिक तैनात हैं।
- रक्षा मंत्री ने शांति सैनिकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला और अभिनव दृष्टिकोणों के महत्व और जिम्मेदार राष्ट्रों के बीच सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया।
- उन्होंने शांति स्थापना मिशनों में महिलाओं के अद्वितीय योगदान की मान्यता पर जोर दिया।
- राजनाथ सिंह ने सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र के निर्णय लेने वाले निकायों को दुनिया की जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं के प्रति अधिक चिंतनशील बनाने की आवश्यकता व्यक्त की।
- उन्होंने उल्लेख किया कि UNSC के स्थायी सदस्य के रूप में भारत की अनुपस्थिति संयुक्त राष्ट्र की नैतिक वैधता को कमजोर करती है।
- रक्षा मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र निकायों को अधिक लोकतांत्रिक और दुनिया की वर्तमान वास्तविकताओं का प्रतिनिधि बनाने का आह्वान किया।

UNPKF क्या है?

- संयुक्त राष्ट्र शांति सेना की स्थापना 1948 में मध्य पूर्व में संयुक्त राष्ट्र सैन्य पर्यवेक्षकों की तैनाती के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से अनुमोदन प्राप्त करने के बाद की गई थी।
- इन बलों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा सशस्त्र संघर्षों से प्रभावित क्षेत्रों में शांति बनाए रखने और बहाल करने के लिए नियोजित किया जाता है।
- उनका मुख्य उद्देश्य शांतिपूर्ण वार्ताओं और संकल्प के माध्यम से राष्ट्रों को युद्ध से शांति की ओर ले जाने में सहायता करना है।
- संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में विभिन्न देशों के सैनिक, पुलिस अधिकारी और नागरिक शांति सैनिक शामिल हैं।
- उनकी तैनाती संघर्ष में शामिल दोनों परस्पर विरोधी पक्षों की स्वीकृति पर निर्भर है।
- शांति सैनिकों की उपस्थिति संघर्षों को बढ़ने से रोकने में मदद कर सकती है और शत्रुता को समाप्त करने में मदद कर सकती है।
- संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस प्रतिवर्ष 29 मई को मनाया जाता है।
- हर साल, शांति प्रयासों के महत्व को उजागर करने के लिए एक विशिष्ट विषय चुना जाता है।
- 2023 की थीम "पीस बिगिन्स विद मी" थी।
- संयुक्त राष्ट्र शांति सेना वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शांति मिशनों में भारत की भागीदारी

- भारत उन राष्ट्रों में से एक है जो संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में अधिकतम सैनिकों का योगदान करता है।
- उदाहरण के लिए, भारत कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (MONUSCO) में संयुक्त राष्ट्र संगठन स्थिरीकरण मिशन में दूसरा सर्वोच्च सैन्य और पाँचवाँ सर्वोच्च पुलिस योगदान देने वाला देश है।
- 1948 में इसकी स्थापना के बाद से 2,60,000 से अधिक भारतीय 49 संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में पहले ही सेवा दे चुके हैं।
- 2007 में, भारत संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के लिए एक महिला दल की स्थापना करने वाला पहला राष्ट्र बन गया।
- पिछले छह दशकों में, लगभग 179 भारतीय सैनिकों ने संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में अपनी जान दी है।
- शांति सैनिकों में सबसे ज्यादा मौतें भारतीयों की होती हैं।

भारत-कनाडाई संबंध

प्रसंग: डॉ. एस. जयशंकर ने कनाडा में एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान खालिस्तान समर्थक समर्थकों द्वारा झांकी के प्रदर्शन की कड़ी निंदा की है और कनाडा को कड़ी चेतावनी दी है।

- 4 जून को कनाडा के ब्रैम्पटन शहर में इंदिरा गांधी की उनके सिख अंगरक्षकों द्वारा हत्या का 'जश्न' मनाने के लिए झांकी निकाली गई।
- खबरों के मुताबिक, ऑपरेशन ब्लूस्टार की 39वीं बरसी की अगुवाई में खालिस्तान समर्थकों द्वारा परेड का आयोजन किया गया था।
- 5 किमी लंबी परेड में एक झाँकी ने पूर्व भारतीय प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के जश्न को दर्शाया।
- झांकी में खून से सनी सफेद साड़ी में एक महिला की आकृति को दिखाया गया है, जिसमे दो पगड़ीधारी पुरुष उस पर बंदूक तान रहे हैं।
- पर्दे के पीछे एक पोस्टर में लिखा था, "दरबार साहिब पर हमले का बदला"।
- झांकी को भारत में कड़ी प्रतिक्रिया मिली, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अस्वीकृति व्यक्त की।

भारत-कनाडा द्विपक्षीय संबंध

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:**
  - भारत ने 1947 में कनाडा के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए।
  - अप्रैल 2015 में भारत के प्रधान मंत्री की कनाडा यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझेदारी में उन्नत किया गया था।
  - दोनों देश विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं।
- **परमाणु सहयोग:**
  - दो छोटे कैनेडियन (CANDU) PHWRs 1972 और 1980 में शुरू हुए थे।
  - मई 1974 में भारत के स्माइलिंग बुद्धा परमाणु परीक्षण के बाद, कनाडा ने भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ द्विपक्षीय परमाणु सहयोग तोड़ दिया।
  - जून 2010 में, भारत और कनाडा के बीच एक परमाणु सहयोग समझौते (NCA) पर हस्ताक्षर किए गए, जो सितंबर 2013 में लागू हुआ।
  - नागरिक परमाणु सहयोग पर एक संयुक्त समिति की स्थापना करते हुए मार्च 2013 में एनसीए के लिए एक उपयुक्त व्यवस्था (एए) पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- **वाणिज्यिक संबंध:**
  - व्यापार और आर्थिक संबंधों की समीक्षा के लिए एक वार्षिक व्यापार मंत्री संवाद को संस्थागत बनाया गया है।
  - एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) के लिए तकनीकी बातचीत चल रही है, जिसमें माल, सेवाओं, निवेश और व्यापार सुविधा में व्यापार शामिल है।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:**
  - भारत और कनाडा के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग मुख्य रूप से आईपी, प्रक्रियाओं, प्रोटोटाइप या उत्पादों में संभावित अनुप्रयोगों के साथ औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है ।
  - प्रौद्योगिकी शिखर सम्मेलन 2017 के लिए कनाडा भागीदार देश था।
- **सुरक्षा और रक्षा:**
  - भारत और कनाडा संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रमंडल और जी-20 सहित अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर घनिष्ठ सहयोग करते हैं।
  - जहाज़ों की आपसी यात्राओं से रक्षा संबंधों का विस्तार हुआ है, और आतंकवाद-निरोध पर संयुक्त कार्य समूह के माध्यम से आतंकवाद-निरोध पर मजबूत सहयोग है।
- **अंतरिक्ष:**
  - अंतरिक्ष विज्ञान, पृथ्वी अवलोकन, उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं और अंतरिक्ष मिशनों के लिए जमीनी समर्थन सहित अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत और कनाडा के सफल सहकारी और वाणिज्यिक संबंध हैं।
  - इसरो और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी (CSA) ने 1996 और 2003 में समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।
  - इसरो की वाणिज्यिक शाखा एंट्रिक्स ने कनाडा से कई नैनो उपग्रह प्रक्षेपित किए हैं।
- **कृषि सहयोग:**
  - 2009 में कृषि सहयोग पर एक द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।
  - उभरती प्रौद्योगिकियों, पशु विकास, कृषि विपणन और दालों में ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त कार्य समूह और उप-समूह बनाए गए।
- **भारतीय प्रवासी:**
  - कनाडा सबसे बड़े भारतीय प्रवासियों में से एक है, जिसमें 1.6 मिलियन पीआईओ (भारतीय मूल के व्यक्ति) और एनआरआई (अनिवासी भारतीय) शामिल हैं।
  - भारतीय प्रवासियों ने भारतीय मूल के संसद के 22 सदस्यों के साथ राजनीति सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:**
  - नवंबर 2017 में भारत के 48वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में कनाडा फोकस देश था।
  - फिल्म उद्योग में एक भारत-कनाडा सह-निर्माण समझौता मौजूद है।
  - पार्लियामेंट हिल पर पिछले 18 सालों से दिवाली मनाई जाती रही है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

साबुन के बुलबुले पर रंग

संदर्भ:

साबुन के बुलबुले और तेल की परतों पर रंगीन पट्टियों की घटना प्रकाश तरंगों के स्वयं में व्यतिकरण के कारण होती है।

प्रकाश तरंगों का व्यतिकरण:

साबुन के बुलबुलों और तेल की परतों पर रंगीन पट्टियां प्रकाश तरंगों के आपस में व्यतिकरण के कारण होती हैं। सूर्य का प्रकाश, सात अलग-अलग रंगों से मिलकर, पतली फिल्मों के साथ परस्पर क्रिया करता है, जिसके परिणामस्वरूप रचनात्मक और विनाशकारी व्यतिकरण होता है।

सूर्य के प्रकाश की समग्र प्रकृति:

सूर्य का प्रकाश सात रंगों अर्थात बैंगनी, नील, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल से मिलकर बना है।

प्रत्येक रंग की अपनी विशिष्ट तरंग दैर्ध्य सीमा होती है। बैंगनी प्रकाश की सबसे कम तरंग दैर्ध्य लगभग **380** नैनोमीटर **(Nanometre)** होती है, जबकि लाल प्रकाश की सबसे लंबी तरंग दैर्ध्य **600** नैनोमीटर से ऊपर होती है।

पथ अंतर और चरण:

जब प्रकाश तरंगें एक पतली फिल्म पर पड़ती हैं, तो वे फिल्म की ऊपरी और निचली सतहों से आंशिक रूप से परावर्तित होती हैं।

फिल्म की मोटाई और देखने के कोण द्वारा निर्धारित पथ अंतर, परावर्तित तरंगों के बीच एक चरण अंतर की ओर जाता है। यह चरण अंतर इस बात को प्रभावित करता है कि तरंगें रचनात्मक या विनाशकारी रूप से व्यतिकरण करती हैं या नहीं।

रचनात्मक और विनाशकारी व्यतिकरण:

जब दो तरंगें चरण में होती हैं, तो वे जुड़ जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप रचनात्मक व्यतिकरण होता है। यह रचनात्मक व्यतिकरण कुछ रंगों को बढ़ाता है और उन्हें दृश्यमान बनाता है। दूसरी ओर, यदि तरंगें चरण से बाहर हैं, तो वे एक दूसरे को रद्द कर सकती हैं, जिससे विनाशकारी व्यतिकरण और कुछ रंगों की अनुपस्थिति हो सकती है।

फिल्म की मोटाई में भिन्नता:

साबुन के बुलबुले फिल्म की मोटाई में मामूली बदलाव के कारण अलग-अलग रंग प्रदर्शित कर सकते हैं, जिसके कारण यह रंगों के एक स्पेक्ट्रम को प्रदर्शित करता है।

एंटी-सबमरीन शैलो वॉटर क्राफ्ट जहाज

संदर्भ:

हाल ही में, अलग-अलग वर्गों से संबंधित दो युद्धपोत अंजदीप (तीसरा एंटी-सबमरीन शैलो वाटर क्राफ्ट) और संशोधक (चौथा सर्वेक्षण पोत बड़ा) को सफलतापूर्वक पानी में उतारा गया, जबकि तीसरे पोत के लिए कील बिछाने का समारोह चेन्नई के कट्टुपल्ली में लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) शिपयार्ड में हुआ।

पनडुब्बी रोधी उथले जल शिल्प जहाज:

एंटी सबमरीन शैलो वॉटर क्राफ्ट **(ASWSWC)** जहाज विशेष नौसेना के जहाज हैं जिन्हें उथले पानी में संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है और मुख्य रूप से पनडुब्बी रोधी युद्ध **(ASW)** संचालन में संलग्न हैं।

महत्त्व:

एंटी-सबमरीन शैलो वॉटर क्राफ्ट **(ASWSWC)** जहाजों को उथले पानी में संचालित करने और एंटी-सबमरीन युद्ध संचालन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वे छोटी पनडुब्बियों और खानों सहित पानी के नीचे के खतरों का पता लगाने और उन्हें बेअसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे भारत की तटीय रक्षा क्षमताओं को बल मिलता है।

जिम्मेदार प्राधिकरण:

युद्धपोतों का निर्माण गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा किया गया है, जो कोलकाता, भारत में स्थित एक रक्षा शिपयार्ड है। रक्षा मंत्रालय **(MoD)** के साथ हस्ताक्षरित अनुबंधों के अनुसार युद्धपोतों के निर्माण के लिए **GRSE** जिम्मेदार है।

सर्वे वेसल लार्ज (एसवीएल) जहाजों और एंटी-सबमरीन शैलो वॉटर क्राफ्ट (एएसडब्ल्यूएसडब्ल्यूसी) जहाजों के लिए निर्माण रणनीति निर्माण के लिए जिम्मेदार शिपयार्ड और उप-संविदा कार्य के आवंटन के संदर्भ में भिन्न है।

निर्माण रणनीति:

एसवीएल जहाज:

निर्माण की जिम्मेदारी: एसवीएल जहाजों की श्रृंखला में प्रारंभिक जहाज सीधे गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा बनाया गया है, जो कोलकाता, भारत में स्थित रक्षा शिपयार्ड है। जीआरएसई पहले एसवीएल जहाज के निर्माण की पूरी जिम्मेदारी लेता है।

उप-अनुबंध: शेष तीन एसवीएल जहाजों के लिए, निर्माण प्रक्रिया को लार्सन एंड टुब्रो (एल एंड टी) जहाज निर्माण के लिए उप-अनुबंधित किया गया है। एलएंडटी शिपबिल्डिंग जीआरएसई को निर्माण कार्य के अंतिम चरण तक पूरा करने में मदद करती है।

ASWSWC जहाज:

निर्माण की जिम्मेदारी: ASWSWC जहाजों के निर्माण की जिम्मेदारी **GRSE** और **L&T** शिपबिल्डिंग के बीच साझा की जाती है।

जीआरएसई की भूमिका: जीआरएसई, कोलकाता स्थित रक्षा शिपयार्ड, सीधे चार एएसडब्ल्यूएसडब्ल्यूसी जहाजों के निर्माण के लिए जिम्मेदार है। वे इन जहाजों के निर्माण को शुरू से अंत तक संभालते हैं।

एलएंडटी शिपबिल्डिंग की भूमिका: शेष चार एएसडब्ल्यूएसडब्ल्यूसी जहाजों को लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) शिपबिल्डिंग के लिए उप-ठेके पर दिया गया है।

मेनहिर और मेगालिथिक दफन स्थल

संदर्भ:

हाल ही में, तमिलनाडु पुरातत्व विभाग ने इरोड जिले के कोडुमनाल में पांच 'मेनहिर' (एकल पत्थर) और मेगालिथिक दफन स्थलों को संरक्षित स्मारकों के रूप में घोषित किया है।

कोडुमनाल और इसका पुरातात्विक महत्व:

कोडुमनाल नोय्याल नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। इस गांव को वर्ष 1961 में पहचान मिली जब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने अपनी पहली खुदाई की गई। उत्खनन गांव में बिखरी हुई पुरावशेषों की खोज से प्रेरित था। इस क्षेत्र के निष्कर्षों ने उस प्राचीन सभ्यता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो कभी यहां पनपी थी।

इस स्थान पर किये गए खोज:

कोडुमनाल में खुदाई से तमिल-ब्राह्मी लिपि, रोमन चांदी के सिक्के, कीमती पत्थरों और क्वार्ट्ज में नामों से खुदे हुए बर्तनों सहित विभिन्न कलाकृतियों का पता चला है। इसके अतिरिक्त, अर्ध-कीमती पत्थर के मोती, चूड़ियाँ, तांबा, चांदी, लोहा और टेराकोटा जैसी वस्तुओं की खोज की गई है, जो इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की भौतिक संस्कृति में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

मेगालिथ का महत्व:

मेगालिथ ऐसी संरचनाएं हैं जिनका निर्माण या तो दफन स्थलों या स्मारक स्मारकों के रूप में किया गया था। दफ़नाने वाले महापाषाणों में डोलमेनॉइड सिस्ट (बक्से के आकार के पत्थर के दफन कक्ष), केयर्न सर्कल (परिभाषित परिधि वाले पत्थर के घेरे) तथा कैपस्टोन (मशरूम के आकार के दफन कक्ष मुख्य रूप से केरल में पाए जाते हैं) शामिल हैं। गैर-सेपुलक्रल मेगालिथ, जैसे मेनहिर, स्मारक स्थलों के रूप में काम करते हैं।

भारत में महापाषाण कालक्रम:

पुरातत्वविद भारत में अधिकांश महापाषाणों को लौह युग में खोजते हैं, विशेष रूप से 1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक। ये उल्लेखनीय संरचनाएं महाराष्ट्र (विशेष रूप से विदर्भ में), कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे राज्यों में केंद्रित हैं।

मेगालिथ ने प्राचीन काल में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति की, जिनमें शामिल हैं:

दफन स्थल: कब्रों या अंत्येष्टि स्मारकों के रूप में उपयोग किया जाता है।

स्मारक स्मारक: व्यक्तियों या घटनाओं को मनाने के लिए बनाया गया।

धार्मिक या अनुष्ठान स्थल: धार्मिक समारोहों या अनुष्ठानों के लिए उपयोग किया जाता है।

भूमि या क्षेत्र के सीमांकन: सीमाओं का सीमांकन करने या क्षेत्रीय दावों को इंगित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व: वास्तुशिल्प और इंजीनियरिंग क्षमताओं का प्रतिनिधित्व किया और सामुदायिक समारोहों और गतिविधियों के लिए केंद्र बिंदु के रूप में कार्य किया।

'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणन

संदर्भ:

हाल ही में, पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के तहत असम में स्थित गुवाहाटी रेलवे स्टेशन को भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) द्वारा 'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणन से सम्मानित किया गया है।

'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणन क्या है?

'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणीकरण भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) द्वारा रेलवे स्टेशनों को दिया जाने वाला एक मान्यता है जो खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और पोषण से संबंधित कुछ मानदंडों को पूरा करता है।

मुंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन को एफएसएसएआई (FSSAI) द्वारा देश के पहले 'ईट राइट स्टेशन' के रूप में प्रमाणित किया गया है। पश्चिम रेलवे द्वारा संचालित मुंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन को 4-स्टार रेटिंग से प्रमाणित किया गया है, जबकि वाराणसी कैंट रेलवे स्टेशन को यात्रियों को उच्च-गुणवत्ता, पौष्टिक भोजन प्रदान करने के लिए 5-स्टार 'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणन से सम्मानित किया जा चूका है।

एफएसएसएआई का उद्देश्य:

इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि रेलवे स्टेशन यात्रियों को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन विकल्प प्रदान करें।

'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणन प्राप्त करने के लिए रेलवे स्टेशनों को निम्नलिखित दिशानिर्देशों को पूरा करना होगा:

- भोजन की तैयारी, भंडारण और परोसने के दौरान खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता मानकों का पालन करना।
- उचित अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं का कार्यान्वयन।
- यात्रियों के लिए विभिन्न प्रकार के स्वस्थ और संतुलित भोजन विकल्पों की उपलब्धता।
- कर्मचारियों और विक्रेताओं के बीच खाद्य सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देना।

प्रमाणन क्यों महत्वपूर्ण है?

निम्नलिखित कारणों से खाद्य सुरक्षा और यात्रियों की भलाई के संदर्भ में 'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणीकरण महत्वपूर्ण है:

- खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना
- स्वस्थ खाद्य विकल्पों को बढ़ावा देना
- स्वच्छता और स्वच्छता मानक
- जागरूकता और शिक्षा
- यात्री विश्वास और संतुष्टि